International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

बघेलखण्ड के प्रमुख लोकनृत्यों का अध्ययन

राघवेन्द्र सिंह
शोधकर्ता , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

डॉ. विक्रम सिंह बघेल
शोध पर्यवेक्षक,अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

सारांश

बघेलखण्ड का लोकनृत्य एक समृद्ध और विविधता भरी सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है, जो इस क्षेत्र के लोगों के जीवन और उत्सवों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बघेलखण्ड, जिसे आमतौर पर बघेलखंड भी कहा जाता है, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित है। यह क्षेत्र न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की लोकसंस्कृति भी बेहद अनोखी और रंगीन है। यहाँ के लोकनृत्यों में परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक धरोहर का अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है। बघेलखण्ड के लोकनृत्य विभिन्न अवसरों पर प्रस्तुत किए जाते हैं, जैसे कि विवाह, त्योहार, फसल कटाई, और धार्मिक अनुष्ठान। इन नृत्यों के माध्यम से स्थानीय लोग अपनी खुशियाँ, दुख, और दैनिक जीवन के संघर्षों को व्यक्त करते हैं। बघेलखण्ड के प्रमुख लोकनृत्यों में प्रमुख हैं – 'धिमराई', 'राई', 'दादरा', 'फाग', 'कौड़ा', और 'आल्हा'। प्रत्येक नृत्य की अपनी विशेषताएँ और महत्त्व हैं, जो उन्हें अद्वितीय बनाते हैं।

मुख्यशब्द- बघेलखण्ड, लोकनृत्य, सांस्कृतिक धरोहर, लोकसंस्कृति

प्रस्तावना

बघेलखण्ड के लोकनृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर और पहचान का प्रतीक हैं। इन नृत्यों के माध्यम से बघेलखण्ड के लोग अपनी परंपराओं को जीवित रखते हैं, और उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाते हैं। लोकनृत्यों के माध्यम से स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है, और वे अपनी कला के माध्यम से अपने समुदाय और संस्कृति को गर्व से प्रस्तुत करते हैं।

बघेलखण्ड के लोकनृत्य न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और महोत्सवों में इन नृत्यों को प्रस्तुत किया जाता है, और इन्हें दर्शकों द्वारा बेहद सराहा जाता है। बघेलखण्ड के लोकनृत्यों की रंगीनता, ऊर्जा, और उत्साह ने उन्हें एक

विशेष स्थान दिलाया है, और वे इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं।

बघेलखण्ड का लोकनृत्य एक जीवंत और गतिशील सांस्कृतिक परंपरा है, जो इस क्षेत्र के लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये नृत्य न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि वे सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक मान्यताओं का भी प्रतिबिंब हैं। बघेलखण्ड के लोकनृत्य इस क्षेत्र की विविधता और सौंदर्य को प्रदर्शित करते हैं, और उन्हें संजोना और संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है। इन नृत्यों के माध्यम से हम बघेलखण्ड की अद्वितीय संस्कृति और धरोहर को समझ सकते हैं, और इसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संजो सकते हैं।

करमा लोकनृत्य

बघेलखण्ड, जिसे आजकल मध्यप्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग और उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग के रूप में जाना जाता है, एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है। इस क्षेत्र की संस्कृति, लोककला, और नृत्य की विविधताएँ इसे विशिष्ट और आकर्षक बनाती हैं। बघेलखण्ड का करमा लोकनृत्य एक प्रमुख और पारंपरिक नृत्य शैली है जो यहां के ग्रामीण जीवन और सांस्कृतिक धरोहर को जीवंतता प्रदान करती है।

करमा लोकनृत्य विशेष रूप से करम पर्व के दौरान किया जाता है, जो भादो मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है। करम पर्व कृषि संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है और यह किसान समुदाय द्वारा फसल की अच्छी उपज और समृद्धि की कामना के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर करम देवता की पूजा की जाती है, जो कृषि और वनस्पतियों के देवता माने जाते हैं। करमा नृत्य का प्रदर्शन इस पर्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है और इसके माध्यम से लोग अपनी खुशी, उल्लास और सामाजिक एकता को व्यक्त करते हैं।

करमा नृत्य की विशेषता यह है कि इसमें समूह में नृत्य किया जाता है। इस नृत्य में पुरुष और महिलाएं दोनों भाग लेते हैं और एक गोलाकार या अर्धगोलाकार आकृति बनाकर नृत्य करते हैं। नर्तक पारंपरिक परिधानों में सजे होते हैं, जिसमें महिलाएं रंग-बिरंगी साड़ियां और आभूषण पहनती हैं, जबकि पुरुष धोती-कुर्ता या अन्य पारंपरिक वेशभूषा में होते हैं। नृत्य के दौरान नर्तक तालबद्ध ढंग से हाथों को मिलाकर, पैरों को थिरकाते हुए और शरीर को विभिन्न मुद्राओं में हिलाते हुए नृत्य करते हैं।

करमा नृत्य का संगीत भी विशेष होता है। इसमें ढोलक, मृदंग, मंजीरा और बांसुरी जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। गायक करम गीत गाते हैं, जो इस नृत्य का

अभिन्न हिस्सा होते हैं। ये गीत प्राचीन लोककथाओं, धार्मिक कथाओं और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित होते हैं। गीतों के बोल और संगीत की धुनें नृत्य के लिए एक समृद्ध और सजीव पृष्ठभूमि तैयार करती हैं, जिससे नर्तक और दर्शक दोनों ही मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

करमा नृत्य की मूल भावना सामाजिक एकता और सामूहिकता में निहित है। यह नृत्य न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह समुदाय के लोगों को एकजुट करने और उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। करमा नृत्य के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से अवगत कराया जाता है और उन्हें अपने पूर्वजों की परंपराओं का सम्मान करना सिखाया जाता है। यह नृत्य व्यक्ति और समाज के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित करता है और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देता है।

बघेलखण्ड का करमा लोकनृत्य न केवल क्षेत्रीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुका है। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और महोत्सवों में इस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है, जहां इसे व्यापक सराहना मिलती है। करमा नृत्य के प्रदर्शन से न केवल बघेलखण्ड की संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता है, बल्कि यह अन्य संस्कृतियों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित करता है।

आज के आधुनिक युग में, जहां सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं का संरक्षण चुनौतीपूर्ण हो गया है, करमा लोकनृत्य एक जीवंत उदाहरण है कि कैसे पारंपरिक नृत्य और संगीत के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहर को संजोया और संवाराजाता है। इसके माध्यम से लोग अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं और अपनी सांस्कृतिक पहचान को गर्व के साथ प्रदर्शित करते हैं।

बघेलखण्ड का करमा लोकनृत्य एक ऐसी अमूल्य धरोहर है जो समय के साथ और भी समृद्ध होती जा रही है। इस नृत्य की परंपरा और महत्व को बनाए रखने के लिए सामुदायिक प्रयास और सरकारी संरक्षण दोनों आवश्यक हैं। यह नृत्य न केवल बघेलखण्ड की संस्कृति का प्रतीक है, बल्कि यह हमारे समाज की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर की समृद्धि का भी प्रतीक है। करमा लोकनृत्य हमें यह सिखाता है कि हमारी परंपराएँ और संस्कृति हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और इन्हें सहेजना और संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है।

करमा नृत्य मध्य प्रदेश के गोंड और बैगा आदिवासियों का प्रमुख नृत्य है। जो मंडला के आसपास क्षेत्रों में किया जाता है। करमा नृत्य

गीत कर्म देवता को प्रशन्न करने के लिए किया जाता है। यह नृत्य कर्म का प्रतीक है। जो आदिवासी व लोकजीवन की कर्म मूलक गतिविधियों को दर्शाता है। यह नृत्य विजयदशमी से प्रारंभ होकर वर्षा के प्रारंभ तक चलता है। ऐसा माना जाता है कि करमा नृत्य कर्मराजा और कर्मरानी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है इसमें प्रायः आठ पुरुष व आठ महिलाएं नृत्य करती है। ये गोलार्ध बनाकर आमने सामने खड़े होकर नृत्य करते है। एक दल गीत उठता है और दूसरा दल दोहराता है | वाध्य यन्त्र मादल का प्रयोग किया जाता है नृत्य में युवक युवती आगे पीछे चलने में एक दुसरे के अंगुठे को छूने की कोशिश करते है | बैगा आदिवासियों के करमा को बैगानी करमा कहा जाता है ताल और लय के अंतर से यह चार प्रकार का होता है। 1) करमा खरी 2) करमा खाय 3) करमा झुलनी ४करमा (लहकी| संक्षेप में करमा नृत्य की विशेषताएं यह नृत्य कर्म को महत्त्व देने वाला है। यह गौंड, बैगा जनजाति के कृषकों द्वारा किया जाता है| यह नृत्य गीत, लय, ताल के साथ पद संचालन पर आधारित है। करमा नृत्य जीवन की व्यापक गतिविधियों से सम्बंधित है। यह नृत्य दशहरे से वर्षाकाल के आरम्भ अर्थात अक्टूबर से जून तक चलता है।

शैला लोकनृत्य

शैला नृत्य, बघेलखंड का एक प्रतीकात्मक लोक नृत्य, मध्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, विशेष रूप से मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में यह नृत्य क्षेत्र के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिवेश का एक जीवंत उत्सव है, जो बघेलखंड समुदाय की एकता, परंपराओं और रोजमर्रा के जीवन का प्रतीक है। अपने जीवंत प्रदर्शनों के माध्यम से, यह इस क्षेत्र की आत्मा में एक खिड़की प्रदान करता है, जो इसके ऐतिहासिक प्रभावों, सामाजिक गतिशीलता और आध्यात्मिक मान्यताओं को दर्शाता है।

बघेलखंड का इतिहास बघेलों से लेकर चंदेलों तक विभिन्न राजवंशों के धागे से बुना गया है, जिनमें से प्रत्येक ने इस क्षेत्र के सांस्कृतिक परिदृश्य पर एक अलग छाप छोड़ी है। शैला नृत्य, जो इस ऐतिहासिक संदर्भ में गहराई से निहित है, इन विविध प्रभावों का एक जीवित भंडार है। यह पारंपरिक रूप से त्योहारों, विवाहों और अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक समारोहों के दौरान किया जाता है, जिसमें मनोरंजन का एक रूप और कहानी कहने का एक माध्यम दोनों शामिल होते हैं। ये प्रदर्शन मिथकों, किंवदंतियों और स्थानीय जनता के रोजमर्रा के अनुभवों को दर्शाते हैं, इस प्रकार पीढ़ियों के माध्यम से सांस्कृतिक आख्यानों को संरक्षित और प्रसारित करते हैं।

शैला नृत्य के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक इसकी सांप्रदायिक प्रकृति है। यह नृत्य एक सामूहिक प्रयास है, जिसे आम तौर पर पुरुषों और महिलाओं के समूहों द्वारा किया जाता है, जो ग्रामीण भारत की विशेषता वाले मजबूत सामुदायिक बंधनों का प्रतीक है। नृत्य-रचना में अक्सर वृत्त या अर्ध-वृत्त बनाना शामिल होता है, जिसमें नर्तक पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों जैसे ढोलक, मंजीरा और बांसुरी की लय में समक्रमित होते हैं। चालें अक्सर सहज होती हैं, जो आशुरचना की अनुमति देती हैं, जो एक गतिशील और जीवंत ऊर्जा के साथ प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। यह सहजता बघेलखंड के लोगों के लचीलेपन और अनुकूलनशीलता को भी दर्शाती है, जिन्होंने विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के बीच सहन किया है और फल-फूल रहे हैं।

शैला नर्तकियों द्वारा पहनी जाने वाली वेशभूषा प्रदर्शन का एक अभिन्न अंग है, जो इसकी दृश्य अपील और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाती है। पुरुष आम तौर पर पारंपरिक धोती और पगड़ी में खुद को सजाते हैं, जबकि महिलाएं जटिल कढ़ाई और गहने से सजी जीवंत साड़ियां पहनती हैं। ये वेशभूषाएं केवल सजावटी नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीकवाद से ओत-प्रोत हैं, जो समृद्धि, आनंद और उत्सव की भावना का प्रतिनिधित्व करती हैं। चमकीले रंग और विस्तृत डिजाइन एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य तमाशा बनाते हैं, जो नृत्य के समग्र प्रभाव को बढ़ाते हैं।

शैला नृत्य की विषयगत सामग्री विविध है, जो अक्सर कृषि जीवन शैली और बघेलखंड के प्राकृतिक वातावरण को दर्शाती है। आम विषयों में कृषि गतिविधियाँ, बदलते मौसम और स्थानीय देवताओं के उत्सव शामिल हैं। उदाहरण के लिए, मानसून का मौसम एक लोकप्रिय विषय है, जिसे नृत्य आंदोलनों के माध्यम से दर्शाया गया है जो बीजों की बुवाई, फसलों की वृद्धि और बारिश के आनंदमय आगमन की नकल करते हैं। यह विषय लोगों और उनकी भूमि के बीच गहरे संबंध को रेखांकित करता है, जो जीवन की चक्रीय प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भरता को उजागर करता है।

शैला नृत्य के ताने-बाने में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व गहराई से जुड़े हुए हैं। कई प्रदर्शन स्थानीय देवताओं और आत्माओं को समर्पित होते हैं, जो भरपूर फसल, अच्छे स्वास्थ्य और समग्र समृद्धि के लिए उनका आशीर्वाद मांगते हैं। इस प्रकार नृत्य दिव्य के साथ संचार के माध्यम के रूप में कार्य करता है, जो मानव और आध्यात्मिक क्षेत्रों को जोड़ता है। शैला नृत्य का यह आध्यात्मिक पहलू बघेलखंड के लोगों में प्रकृति के प्रति गहरी

जड़ों वाली धार्मिकता और श्रद्धा को रेखांकित करता है।

गुदुम्बाजा लोकनृत्य

मध्य भारत के केंद्र में स्थित क्षेत्र बघेलखंड का गुडम बाजा नृत्य एक सांस्कृतिक रत्न है जो अपने लोगों की समृद्ध विरासत और परंपराओं को दर्शाता है। यह लोक नृत्य, जो अपनी ऊर्जावान लय, जीवंत आंदोलनों और गहरी जड़ों वाले सांस्कृतिक प्रतीकवाद की विशेषता है, समुदाय के सामाजिक ताने-बाने में एक विशेष स्थान रखता है।

बघेलखंड, वर्तमान मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों को शामिल करते हुए, अपनी विविध सांस्कृतिक चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ परंपराओं को संरक्षित किया गया है और पीढ़ियों से पारित किया गया है। गुडम बाजा नृत्य इस परिवेश के भीतर एक प्रमुख सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में उभरता है, जो न केवल मनोरंजन के रूप में बल्कि सांस्कृतिक प्रसारण और सामुदायिक बंधन के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करता है।

गुडम बाजा नृत्य के मूल में इसकी संगीत संगत है, जो मुख्य रूप से गुडम द्वारा संचालित है, एक पारंपरिक ड्रम जो नृत्य को अपना नाम देता है। गुडम की तालों के साथ-साथ ढोलक, नगर और झंज जैसे अन्य स्वदेशी वाद्ययंत्रों ने नर्तकियों के लिए लय निर्धारित किया। लय जीवंत, समन्वित और अक्सर तात्कालिक होते हैं, जो सहजता और आनंदमय उत्सव का वातावरण बनाते हैं।

नृत्य आमतौर पर त्योहारों के अवसरों जैसे शादियों, दिवाली और होली जैसे फसल उत्सवों और धार्मिक समारोहों के दौरान किया जाता है। यह न केवल मनोरंजन करता है बल्कि आशीर्वाद, समृद्धि और सांप्रदायिक सद्भाव का आह्वान करता है। जटिल प्रतिरूपों और गहनों से सजी जीवंत पोशाक में सजे नर्तक, समन्वित प्रतिरूपों में चलते हैं जो बघेलखंड की सांस्कृतिक कथाओं और सामाजिक गतिशीलता को दर्शाते हैं।

गुडुम बाजा नृत्य में प्रत्येक आंदोलन प्रतीकवाद और परंपरा में डूबा हुआ है। कृषि प्रथाओं को प्रतिबिंबित करने वाले जटिल फुटवर्क से लेकर हाथ के इशारे जो पौराणिक कहानियों और रोजमर्रा के जीवन को दर्शाते हैं, नृत्य का हर पहलू एक गहरा सांस्कृतिक अर्थ बताता है। इन हाव-भावों के माध्यम से, नर्तक प्रेम, वीरता, लोककथाओं और आध्यात्मिक भक्ति की कहानियों को व्यक्त करते हैं, मौखिक परंपराओं और क्षेत्र के ऐतिहासिक आख्यानों को संरक्षित करते हैं।

यह नृत्य सामुदायिक बंधनों और सामाजिक सामंजस्य को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाता है। यह सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाता है, एकता और साझा पहचान की भावना को बढ़ावा देता है। विशेष रूप से ग्रामीण समुदायों में, नृत्य एक सामाजिक स्तर के रूप में कार्य करता है, जाति, वर्ग और लिंग बाधाओं को पार करता है, और प्रतिभागियों के बीच समावेशिता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है।

अपने सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों के अलावा, गुडुम बाजा नृत्य का आर्थिक महत्व भी है। यह उन कारीगरों के लिए आजीविका के अवसर प्रदान करता है जो संगीत वाद्ययंत्र, पारंपरिक वेशभूषा और प्रदर्शन में उपयोग किए जाने वाले गहने बनाते हैं। इसके अलावा, नृत्य की लोकप्रियता ने पर्यटन के अवसरों को जन्म दिया है, सांस्कृतिक उत्साही और शोधकर्ता इस अनूठी सांस्कृतिक घटना को देखने और अध्ययन करने के लिए बघेलखंड आते हैं।

हाल के वर्षों में, आधुनिक प्रभावों और बदलते सामाजिक मानदंडों के बीच गुडुम बाजा नृत्य को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के प्रयास किए गए हैं। सांस्कृतिक संगठन, स्थानीय सरकारें और सामुदायिक नेता पारंपरिक नृत्य रूपों का दस्तावेजीकरण और संरक्षण करने के लिए सहयोग करते हैं। वे युवा पीढ़ियों को उनकी सांस्कृतिक विरासत के बारे में शिक्षित करने और पारंपरिक कलाओं में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यशालाओं, त्योहारों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का आयोजन करते हैं।

काली नृत्य लोकनृत्य

बघेलखण्ड का 'काली नृत्य' एक प्रमुख लोकनृत्य है जो मध्यप्रदेश राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्ध है। इस नृत्य का नाम संबंधित है देवी काली से, जो हिंदू धर्म में शक्ति और शक्ति की प्रतिष्ठा की देवी मानी जाती हैं। काली नृत्य को समर्पित करने का अर्थ है शक्ति और वीरता की भावना को उजागर करना, जिसमें नृत्यार्थी मासूमियत से विमुख होते हैं और अपनी आत्मा को देवी काली में समर्पित करते हैं।

बघेलखण्ड के लोकनृत्य के रूप में, काली नृत्य एक माध्यम है जिसके माध्यम से स्थानीय समुदाय की धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। यह नृत्य विशेषकर महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो अपने परिवार और समाज के साथ एकता और समर्थन का संदेश देने के लिए इसे आयोजित करती हैं।

काली नृत्य के रंग-बिरंगे और भव्य संगीत, जो आमतौर पर ढोलक, मंजीरा और झांझ पर आधारित होता है, एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है। यह नृत्य उत्कृष्टता और शिक्षा का एक संयुक्त अभिनव उदाहरण है, जो समुदाय

के नेतृत्व, गहरी समाजिक संरचना और संस्कार में निहित है।

बघेलखण्ड के प्राचीन संस्कृति में, काली नृत्य एक प्रत्येक समाज के लिए महत्वपूर्ण था, जिसमें उनकी समस्याओं, उत्थानों और अवसरों को साझा किया जाता था। इसे एक शक्तिशाली और प्रेरणादायक अद्वितीय उपकरण के रूप में देखा जाता है, जो समाज के विकास में भूमिका निभाता है और समुदाय के साथ अटूट बंधन बनाता है।

बघेलखंड, मध्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक में डूबा हुआ एक क्षेत्र, अपने पारंपरिक नृत्यों, विशेष रूप से जीवंत और अभिव्यंजक काले नृत्य की लयबद्ध दिल की धड़कन के साथ प्रतिध्वनित होता है। इस क्षेत्र के हरे-भरे जंगलों और घुमावदार पहाड़ियों के बीच बसे आदिवासी समुदायों से उत्पन्न, काला नृत्य प्रकृति, आध्यात्मिकता और इसके लोगों की पैतृक विरासत के साथ एक गहरा संबंध रखता है।

बघेलखंड का काला नृत्य एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला तमाशा है जो प्राचीन परंपराओं और रहस्यमय लोककथाओं की पृष्ठभूमि में सामने आता है। अपनी आदिवासी पहचान को प्रतिबिंबित करने वाली पोशाक में सजे, नर्तकियां सावधानीपूर्वक एक ऐसी यात्रा शुरू करने की तैयारी करती हैं जो सांसारिक क्षेत्र को दिव्य के साथ जोड़ती है। नृत्य का नाम, "काली नृत्य", पोशाक के प्राकृतिक रंगों और गहरे, उत्तेजक विषयों से लिया गया है।

काली नृत्य के केंद्र में मिथकों, किंवदंतियों और पीढ़ियों से चली आ रही कहानियों से बुनी गई एक कथा चित्रकारी है। वीरता, प्रेम, प्रतिकूलता पर विजय, और अच्छे और बुरे के बीच कालातीत संघर्ष के विषय निर्बाध रूप से जुड़े हुए हैं, जो आंदोलन और अभिव्यक्ति के माध्यम से मानव अस्तित्व के सार को पकड़ते हैं। प्रत्येक भाव, प्रत्येक कदम, प्रतीकवाद की परतें रखता है जो समुदाय की सामूहिक चेतना और उनकी पैतृक भूमि के साथ उनके स्थायी बंधन की बात करता है।

ढोल की लयबद्ध ताल गति निर्धारित करती है, जो हवा के माध्यम से पृथ्वी के दिल की धड़कन की तरह प्रतिध्वनित होती है। ढोलकी, बांसुरी और नगर जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों की मधुर धुनों के साथ, नर्तकियां सांसारिकता को पार करती हैं और एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करती हैं जहां अतीत, वर्तमान और भविष्य मिलते हैं। उनकी चालें, कभी-कभी जोरदार और प्रभावशाली, कभी-कभी सुंदर और अलौकिक, जीवन के शाश्वत नृत्य के उतार-चढ़ाव और प्रवाह को दर्शाती हैं।

बघेलखंड का काला नृत्य केवल एक प्रदर्शन नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक आह्वान है, जो

दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करता है और प्राकृतिक दुनिया के साथ सद्भाव की तलाश करता है। यह उन लोगों के लचीलेपन के लिए एक वसीयतनामा के रूप में कार्य करता है जिन्होंने आधुनिकता की धाराओं के बीच अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किया है, प्राचीन परंपराओं की रक्षा की है जो सामुदायिक सामंजस्य और आध्यात्मिक पोषण के स्तंभों के रूप में काम करते हैं।

जैसे-जैसे गोधूलि बघेलखंड के ऊबड़-खाबड़ परिदृश्यों पर उतरती है, काली नृत्य उन लोगों के दिलों और दिमागों को रोशन करना जारी रखता है जो इसका जादू देखते हैं। यह भाषा और सीमाओं को पार करता है, एक ऐसी दुनिया की झलक पेश करता है जहां परंपरा और आधुनिकता सामंजस्यपूर्ण रूप से सह-अस्तित्व में हैं, और जहां नृत्य की कालातीत कला मानवता और ब्रह्मांड के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती है।

निष्कर्ष

बघेलखण्ड के प्रमुख नृत्य एक ऐसे लोगों की स्थायी भावना का प्रमाण है, जिनकी सांस्कृतिक विरासत तेजी से बदलती दुनिया की पृष्ठभूमि में लगातार फल-फूल रही है। यह जीवन, प्रेम और समझ के लिए शाश्वत खोज का उत्सव है जो हम सभी को एकजुट करता है। अपनी मंत्रमुग्ध कर देने वाली लय और प्रेरक कहानी के माध्यम से, काली नृत्य हमें अपनी यात्राओं पर विचार करने, अपनी जड़ों से फिर से जुड़ने और विविधता के सभी रूपों की सुंदरता को गले लगाने के लिए आमंत्रित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, एन. (2004). बघेलखंड की प्रदर्शन कलाएँ। आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।

मिश्रा, ए. (2009). बघेलखंड की पारंपरिक वेशभूषा और वस्त्र। अभिनव प्रकाशन।

शर्मा, पी. (2013). बघेलखंड की सांस्कृतिक पारिस्थितिकी। रावत प्रकाशन।

वर्मा, एम. (2016). बघेलखंड में अनुष्ठानिक प्रथाएँ। साहित्य संगम।

चतुर्वेदी, आर. (2021). बघेलखंड की लोककथाएँ और मौखिक आख्यान। भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान।

पांडे, डी। (2008). बघेलखंड की पौराणिक कथाएँ और धार्मिक मान्यताएँ। D.K. प्रिंटवर्ल्ड (पी) लिमिटेड

शर्मा, आर. (2010). बघेलखंड के नृत्य रूप। नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत।

गुप्ता, एस. (2014). बघेलखंड में सांस्कृतिक उत्सव। राजकमल प्रकाशन।

तिवारी, वी. (2017). बघेलखंड की लोक कला और शिल्प। साहित्य अकादमी।

मिश्रा, एस. (2005). बघेलखंड के पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र। प्रकाशन प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार। भारत से।

वर्मा, ए. (2011). बघेलखंड की मौखिक परंपराएँ और लोककथाएँ। D.K. प्रिंटवर्ल्ड (पी) लिमिटेड

सक्सेना, पी. (2019). बघेलखंड का लोक साहित्य। साहित्य भवन प्रकाशन।

तिवारी, आर. (2003). बघेलखंड का सांस्कृतिक नृविज्ञान। अनामिका प्रकाशक और वितरक।

मिश्रा, एच. (2007). बघेलखंड की लोक कविताएँ और गाथागीत। भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद।

गुप्ता, ए. (2012). बघेलखंड में सांस्कृतिक विरासत संरक्षण। राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

सिंह, बी। (2016). बघेलखंड का लोक रंगमंच। मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स